कर्ण

कर्ण महाभारत के मुख्य पात्र एवं दानवीर के रूप में प्रसिद्ध है। कर्ण के दानवीरता के भी अनेक संदर्भ मिलते हैं। उनकी दानशीलता की ख्याति सुनकर इन्द्र उनके पास कुण्डल और कवच माँगने गये थे।कर्ण ने अपने पिता सूर्य के द्वारा इन्द्र की प्रवंचनाका रहस्य जानते हुए भी उनको कुंडल और कवच दे दिये।इन्द्र ने उसके बदले में एक बार प्रयोग के लिए अपनी आमोघ शक्ति दे दी थी। उससे किसी का वध अवश्यम्भावी था। कर्ण उस शक्ति का प्रयोग अर्जुन पर करना चाहते थे । किंतु दुर्योधन के निदेश पर उन्होंने उसका प्रयोग भीम के पुत्र घटोत्कच पर किया था । अपने ंतिम समय में पितामह भीष्म ने कर्ण को उनके जन्म का रहस्य बताते हुए महाभारत के युद्ध में पाण्डवों का ससाथ देने को कहा था किंतु कर्ण ने इसका प्रतिरोध करके अपनी सत्यनिष्ठा का परिचय दिया ।भीम के अनंतर कर्ण कौरव सेना के सेनापति नियुक्त हुए थे।अंत में तीन दिन तक युद्ध संचालन के उपरांत अर्जुन ने उनका वध कर दिया ।कर्ण के चरित्र में आदर्शों का दर्शन उनकी दानवीरता एवं युद्धवीरता के युगपत् प्रसंगों में किया जा सकता है।